विचार बिन्दु

समय सबसे बड़ा चिकित्सक है, वक्त हर घाव का मरहम है। –कहावत

शौर्य-पराक्रम मेवाड़ रत्न महाराणा प्रताप

इतिहास गवाह है कि मुगल सम्राट अकबर के द्वारा दिये गये झूठे आश्वासन, उच्चस्थान, पदाधिकार आदि प्रलोभनों और भय से वशीभूत होकर कई राजपतू राजाओं ने सम्राट अकबर सत्ता के सामने नतमस्तक होकर उनकी अधीनता मंजूर कर ली थी जिससे यह स्थापित हो गया कि अधिकतर राजपूत अपना गौरव खो चुके थे ऐसा प्रतीत होता था कि मानों पूरा राजस्थान ही अपना आत्मगौरव खो कर अकबर की गुलामी स्वीकार कर ली थी। निराशा के ऐसे कठिन समय में मेवाड़ के महाराणा प्रताप का मातृभूमि की रक्षा के लिए राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश हुआ। नि:संदेह अकबर हिन्दुओं के जयचंदों की मदद बल से ही हिन्दू राजाओं को अपने अधीन करता था। तत्कालीन हिंदू राजाओं की कायरता एवं मूर्खता का अकबर ने भरपूर लाभ उठाया। हिन्दू स्वाभिमान को कुचलने के लिए अकबर ने सभी प्रकार के उपाय और लगभग सभी राजपूत राजाओं को अपने आधीन करने में सफल रहा। कई राजपूत राजाओं ने मान-सम्मान को ताक पर रखकर अपनी बेटियों को भी अकबर के दरबार में पहुंचा दिया। यह भारतीय इतिहास का सबसे कलंकित अध्याय है।

किन्तु इसके विपरीत मेवाड़, बूंदी तथा सिरोही वंश के राजा अंत तक अकबर से संघर्ष करते रहे। मेवाड़ के राणा उदयसिंह का स्वतंत्र रहना अकबर के लिए असहनीय था। चूँकि मेवाड़ के राजा उदय सिंह विलासी प्रवृत्ति के थे इसलिए अकबर ने मेवाड़ विजय के लिए भारी भरकम सेना के साथ मेवाड़ पर हमला बोल दिया। दुर्बल उदय सिंह का मनोबल बहुत ही गिरा हुआ था इसलिए वह मैदान छोड़ कर भाग गया। अरावली की पहाड़ियों पर छुप गया। वहीं पर उसने उदयपुर नामक नगर बसाया और राजधानी भी बनायीं। उदय सिंह ने अपनी मृत्यु के पूर्व अपनी कनिष्ठ पत्नी के पुत्र जगमल्ल को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया लेकिन उसके अन्य सरदारों ने जगमल्ल के खिलाफ विद्रोह कर दिया और महाराणा प्रताप को अपना राजा घोषित कर दिया। राजा घोषित होते ही प्रताप को विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। राणा प्रताप के भाई शक्ति सिंह और जगमाल मुगलों से मिल गये। शत्रुओं का मुकाबला करने के लिए मजबूत सैन्य शक्ति की महती आवश्यकता थी। राणा प्रताप सदैव इसी चिंता में लगे रहते थे कि अपनी मातृभूमि को मुगलों से किस प्रकार मुक्त कराया जाये। परम पवित्र चितौड़ का विनाश उनके लिए बेहद असहनीय था। एक दिन राणा प्रताप ने दरबार लगाकर अपनी ओजस्वी वाणी में सरदारों का स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए आव्हान करके उनमें नया जोश भरा तथा युद्ध की प्रेरणा प्रदान दी।

एक बार शीतल भाट उनके दरबार आ पहुंचा और शौर्य तथा वीरता की कविताएं सुनायीं। शीतल भाट की ओजस्वी वीरता का संदेश देने वाली कविता सुनकर महाराणा ने अपनी पगड़ी उतारकर भाट को इनाम में दे दी। राजपूतों के लिए उसकी पगड़ी आन नान धान। महाराणा प्रताप ने अचानक उस पर धावा बोल दिया। अचानक हमले से सभी मुगल सैनिक भाग खड़े हुये। इसी प्रकार महाराणा ने कई अन्य किले भी अपने आधीन कर लिये। बाद में उदयपुर भी राणाप्रताप के कब्जे में आ गया। इस प्रकार महाराणा प्रताप एक के बाद एक किले जीतते चले गये। महाराणा प्रताप की वीरता की बातें सुनकर अकबर शांत रह गया और उसने अपना सारा ध्यान दक्षिण की ओर लगा दिया। लगातार युद्ध करते रहने और संकटों को झेलने के कारण महाराणा का शरीर लगातार कमज़ोर होता जा रहा था। 19 जनवरी 1597 के दिन अंतिम सांस ली। भारतीय इतिहास के पुराण पुरूष महाराण प्रताप सिंह स्वाधीनता की रक्षा करने वाले मेवाड़ के स्वनामधन्य वीरों की मणिमाला मे सुर्कतिमान हैं।

अकबर को महान कहना चाहिए या फिर महाराणा प्रताप को? यह सवाल पिछले कई वर्षो से भारतीयों के मस्तिष्क में एक अनसुलझी पहेली बना हुआ है। यों तो अकबर और प्रताप दोनों अपनी अपनी जगह महान थे। दोनों के कारण भारत को फायदा हुआ। अकबर और प्रताप से हम आज भी बहुत कुछ सीख सकते हैं, बशर्ते हम शांत मन से चिंतन करें कि उस समय हुआ क्या था? अगर आप भारत को एक सूत्र में बांधने के काम को महान मानते हैं तो अकबर द्वारा की गई कोशिशे काबिले तारीफ थी, वहीं अल्प साधनों किन्तु अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता और गौरव के लिये अद्भुत वीरता ओर प्राण न्योछावर करने के मजबूत इरादों के साथ आक्रमणकारी का सामना करते हुए आक्रान्ता को पीछे धकेलने का साहस मेवाड़ रत्न राणाप्रताप ने ही किया, इसलिये राणाप्रताप भी महान कहलाने के अधिकारी हैं।

महाराणा प्रताप मेवाड़ की अस्मिता के प्रतीक तो हैं ही उनका नाम देशभक्ति, स्वाभिमान और दृढ प्रण के लिये सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने जीवन पर्यन्त मेवाड़ की आजादी एवं अस्मिता के लिए मुगल बादशाह अकबरके साथ साथ निरंतर संघर्ष किया एवं कभी भी अकबर की आधीनता स्वीकार नहीं की। अकबर ने महाराणा प्रताप को समझाने के लिये एवं दिल्ली सल्तनत की अधीनता स्वीकार करने हेतु कई दूतों को भेजा जिनमें प्रमुख जलाल खान कोरची (सितम्बर 1572), मानसिंह (1573), भगवान दास (सितम्बर-अक्टूबर 1573) एवं टोडरमल (दिसम्बर 1573) मुख्य है। महाराणा प्रताप का जन्म 15 मई 1540 यानि ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया, विक्रम संवत 1597 को कुम्भलगढ़ में महाराणा उदयसिंह एवं माता राणी जीवत कँवर के यहाँ हुआ था। महाराणा प्रताप की माता का नाम जैवन्ताबाई था, जो पाली के सोनगरा अखैराज की बेटी थी। महाराणा प्रताप को बचपन में कीका के नाम से पुकारा जाता था। महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक गोगुंदा में हुआ। महाराणा प्रताप ने अपने जीवन में कुल 11 शादियां की थी। कहा जाता है कि उन्होंने ये सभी शादियां राजनीतिक कारणों से की थी।

मेवाड़ के आदिवासी भीलों ने हल्दी घाटी में अकबर की फौज को अपने तीरो से रौंद डाला था सभी भील महाराणा प्रताप को अपना बेटा मानते थे और राणा जी बिना भेद भाव के उन के साथ रहते थे। आज भी मेवाड़ के राजचिन्ह पर एक तरफ राजपूत है तो दूसरी तरफ भील। शत्रु सेना से घिर चुके महाराणा प्रताप को उनके विद्रही भाई शक्ति सिंह ने बचाया, किन्तु इस युद्ध में राणाप्रताप के प्रिय घोड़े चेतक की भी मृत्यु हो गई।

अकबर कूटनीती का जानकार था इसलिए उसने अपनी दो लाख सेना का नेतृत्व सलीम व मान सिंह को सौंपा। यह युद्ध बहुत ही भयंकर था। महाराणा प्रताप ने पूरी सजगता-वीरता के साथ युद्ध लड़ा लेकिन यह निर्णायक नहीं रहा। हल्दी घाटी की लड़ाई (18 जून 1576) हल्दीघाटी का कण-कण आज भी प्रताप की सेना के शौर्य, पराक्रम और बलिदानों की कहानी कहता है। 18 जून 1576 का भारत के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है क्योंकि इसी दिन प्रसिद्ध हल्दीघाटी की लड़ाई में लगभग बाईस हजार आजादी के मतवाले राजपूतों के साथ राणा प्रताप ने अकबर की मुगल सेना के सेनापति राजा मानसिंह एवं आसफ खाँ की अस्सी हजार सैनिकों की विशालकाय सेना का वीरता पूर्वक सामना किया था। हल्दीघाटी की लड़ाई मात्र एक दिन चली परन्तु इसमें 14000 राजपूत सैनिकों को अपने प्राणों की आहुती देनी पड़ी। हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप की तरफ से लडने वालों के अंदर मुस्लिम सरदार हकीमखां सूरी भी थे। मेवाड़ के आदिवासी भीलों ने हल्दी घाटी में अकबर की फौज को अपने तीरो से रौंद डाला था सभी भील महाराणा प्रताप को अपना बेटा मानते थे और राणा जी बिना भेद भाव के उन के साथ रहते थे। आज भी मेवाड़ के राजचिन्ह पर एक तरफ राजपूत है तो दूसरी तरफ भील। शत्रु सेना से घिर चुके महाराणा प्रताप को उनके विद्रही भाई शक्ति सिंह ने बचाया, किन्तु इस युद्ध में राणाप्रताप के प्रिय घोड़े चेतक की भी मृत्यु हो गई। चित्तौड़ की हल्दीघाटी में चेतक की समाधि बनी हुई है। चेतक का अंतिम संस्कार महाराणा प्रताप और उनके भाई शक्ति सिंह ने किया था। महाराणा प्रताप के भाले और कवच का वजन 80 किलो था। महाराणा प्रताप की तलवार कवच आदि सामान उदयपुर राज घराने के संग्रहालय में रखे हुए हैं। मेवाड़ राजघराने के वारिस को एकलिंग जी भगवान का दीवान माना जाता है।

दानवीर भामाशाह का त्याग युद्धभूमि पर उपस्थित बाईस हज़ार राजपूत सैनिकों में से केवल आठ हज़ार जीवित सैनिक युद्धभूमि से किसी प्रकार बचकर निकल पाये। मेवाड़ को जीतने के लिये अकबर ने सभी प्रयास किये किन्तु वो सफल नहीं हो सका। निरंतर सघर्ष के कारण महाराणा की आर्थिक हालत दिन-प्रतिदिन कमजोर होती गई एवं एक बार तो वो विचलित भी हो गये। विपत्तियों के इन क्षणों में भामाशाह ने अपने जीवन की सारी कमाई को राणाप्रताप को अर्पित कर मेवाड़ की रक्षा हेतु लड़ाई चालू रखने का निवेदन किया। भामाशाह की यह आर्थिक सहायता लगभग 25000 राजपूतों की सेना के 12 साल तक का वेतन और निर्वाह के लिए पर्याप्त थी। अपनी दानशीलता के लिए भामाशाह भी इतिहास पुरुष बने इसीलिये आज भी कई राज्यों में उनके नाम से जन कल्याणकारी योजनायें चला रहें हैं।

झाला सरदार मन्नाजी का बलिदान हल्दीघाटी का युद्ध अत्यन्त घमासान हो गया था। एक समय ऐसा आया जब शहजादा सलीम पर राणा प्रताप स्वयं आक्रमण कर रहे थे, दोनों लहूलुहान हो गये थे, इस दृश्य को देखकर कर हजारों मुगलसैनिक सलीम की रक्षा करने हेतु उसी तरफ़ बढ़े और राणाप्रताप को चारों तरफ़ से घेर कर उन पर प्रहार करने लगे। राणाप्रताप के सिर पर मेवाड़ का राजमुकुट लगा हुआ था अत:मुगलों ने मिलकर उन्हीं को निशाना बना लिया था वहीं दुसरी तरफ राणाप्रताप के रणबाकुरें राजपूतसैनिक भी प्रताप को बचाने के लिए अपने प्राण को हथेली पर रख कर संघर्ष कर रहे थे। दुर्भाग्यवश प्रताप संकट में फँसते जा रहे थे। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए झाला सरदार मन्ना जी ने स्वामिभक्ति का एक बेमिसाल आदर्श प्रस्तुत करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। झाला सरदार मन्नाजी तेजी के साथ युद्ध भूमि में सैनिकों को चीरते हुए आगे बढे और राणा प्रताप के सिर से मुकुट उतार कर अपने सिर पर रख लिया और तेजी के साथ कुछ दूरी पर जाकर मुगलों से घमासान युद्ध करने लगे। मुगलों ने झाला सरदार मुन्नाजी को ही प्रताप समझा और उस पर टूट पड़े, इस तरह राणाप्रताप को राष्ट्र युद्ध भूमि से दूर निकल जाने का अवसर मिल गया। उनका सारा शरीर असंख्य घावों से लहूलुहान हो चुका था। युद्धभूमि से लौटते समय राणाप्रताप मेवाड़ के वीर मन्नाजी को अपने प्राणों की आहुती देते देखा। इस युद्ध में नगण्य संख्या में मौजूद राजपूतों ने बहादुरी के साथ मुगलों का सामना किया, परन्तु तोपों तथा बंदूकधारियों से सुसज्जित शत्रु की विशाल सेना के सामने उनका समूचा परिश्रम निष्फल रहा। इतिहास के पन्नों में झाला सरदार मुन्ना जी का बलिदान स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा।

राणा प्रताप का इतिहास प्रसिद्ध घोड़ा चेतक मूल रूप से काठियावाड़ मूल का अश्व था जो उनको उनके प्राणो से ज्यादा प्रिय था। चेतक की चाल हवा से भी ज्यादा थी। हल्दी घाटी की लड़ाई उसकी एक पाँव बुरी तरह से जख्मी हो गया उसके बावजद चेतक ने प्रताप की जान बचाई और वीर गति को प्राप्त हुआ था। आज भी उसकी स्वामी भक्ति को आदर से याद किया जाता है। आज जब समस्त राष्ट्र सांप्रदायिक दंगों की विभिषिका से ग्रस्त है और गंगा-जमुना संस्कृति खतरे में है। वहीं दुसरी तरफ महाराणा प्रताप की नीतियां और कार्यशेली मेवाड़ और राजस्थान में सैकड़ों वर्षों से चली आ रही हिदू-मुस्लिम एकता को बताती हैं।

डॉ. शर्मा के मुताबिक अब्दुल रहीम खान-ए-खाना को अकबर ने हल्दीघाटी युद्ध के बाद अजमेर का सूबेदार बनाया था रहीम खान को एक ही आदेश था महाराणा प्रताप को जिंदा या मुर्दा पकड़ना है। इसके लिए रहीम ने अपना कैंप आबू की तलहटी में लगाया। उस समय प्रताप सुंधा माता की पहाड़ियों में रह रहे थे। प्रताप के बेटे अमर सिंह ने रहीम के कैंप का पता पता लगा करके और उसे युद्ध में परास्त करके उसकी बेगम को अगवा कर प्रताप के पास ले आए। अमर सिंह ने तर्क दिया कि जो मुगल उनके साथ करते हैं वहीं वो उनके बच्चों के साथ करेंगे। जैसे ही ये बात महाराणा प्रताप को पता चली तो वे अमर सिंह पर क्रोधित होकर अपना आपा खो कर अपने बेटे अमर सिंह को वापस महिला को सम्मान से सुरक्षित उनके कैंप में भिजवाने की व्यवस्था के आदेश दिए। प्रताप ने कहा चाहे वो हिंदू हो या मुस्लिम नारी, स्त्री हमेशा भारतीय संस्कृति में आदरणीय रही है। इसका परिणाम होता है कि रहीम खुद अकबर को कहता है कि प्रताप इतने महान हैं। ऐसे महान व्यक्तित्व के खिलाफ वह संघर्ष नहीं कर सकता। इसके बाद रहीम की अजमेर से सूबेदारी हटा दी गई थी। अब्दुल रहीम ही बाद में श्रेष्ठ कवि रहीम के रूप में पहचाने गए।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. जे.के. गर्ग, पूर्व संयुक्त निदेशक
कालेज शिक्षा, जयपुर

ताबीज से ट्रांजिस्टर तक: विवेकानंद के सपने से विज्ञान के कदम तक - तथ्यपरक जन-जागृति लेख

मदन सिंह काला

धर्म दुनिया भर में कैसे पनपा? 12 हजार साल पहले खेती शुरू हुई। इंसान ने सोचा- 'बारिश कौन कराता है?' जवाब नहीं था। मिस्त्र ने सूरज को 'रा' कहा, यूनान ने बिजली को 'ज्यूस' (Zeus)। भारत में ऋग्वेद 1500 ईसा पूर्व : अग्नि, वरुण, इंद्र की स्तुति। डर और अनिश्चितता से 'प्रकृति-पूजा' निकली। फिर गांव और शहर बने। 10 हजार लोग साथ रहें तो नियम चाहिए। राजा के डंडे से ज्यादा 'भगवान का डर' काम आया। मिस्त्र के फिरऔन 'ईश्वर का बेटा' कहलाए, भारत में राजा 'इंद्र का अंश'। धर्म दो खंभों पर खड़ा हुआ- 1. प्रकृति का डर, 2. समाज चलाने का नियम। -आज संयुक्त राष्ट्र के 193 देशों में 4,300 से ज्यादा धर्म-संप्रदाय दर्ज हैं। पर जड़ एक- जो समझ नहीं आया, उसका जवाब भगवान के नाम पर रचित ग्रंथो से दिया।

'मानो मत, जानो' की चिंगारी कब फूटी? 600 ईसा पूर्व यूनान में थेल्स ने पानी को मूल बताया- भगवान को नहीं। भारत में चार्वाक बोला- 'भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत:'। अर्थात जला हुआ शरीर वापस कैसे आएगा? बुद्ध ने कहा- 'ईश्वर पर बहस मत करो, दुख का कारण खोजो'। धर्म से असली बगावत 1543 में हुई। कॉपरनिकस ने कहा, 'धरती नहीं, सूरज केंद्र है'। इसे चर्च ने 1616 में बैन किया। 1633 में गैलीलियो ने कहा ''पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा लगाती है'' -उससे धार्मिक दबाव में माफी मंगवाई। 1859 में डार्विन: 'ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज' - बाइबल हिल गई। -कैसे? बाइबल कहती थी भगवान ने सभी जीव 6 दिन में एक जैसे बनाए। डार्विन ने कहा नहीं, जीव 'प्राकृतिक चयन' से धीरे-धीरे बदले, इंसान भी विकास का नतीजा है। इंसान 'ईश्वर की खास रचना' से 'कुदरत का उत्पाद' बन गया। इसलिए चर्च काँप गया।- विज्ञान का सूत्र बना: 1. देखो, 2. सोचो, 3. करके दिखाओ, 4. दुनिया से जांच कराओ। 'आप्त-वाक्य' की जगह 'प्रयोग-वाक्य' आया।

1660 में लंदन में 'रॉयल सोसाइटी' बनी। राजा का आदेश- 'यहाँ बाइबल पर बहस नहीं, प्रकृति पर प्रयोग होगा'। 1666 में पेरिस 'एकेडमी ऑफ साइंसेज'। जर्मनी ने 1809 में हम्बोल्ट यूनिवर्सिटी मॉडल दिया- पढ़ाई, लैब और फैक्ट्री। अमेरिका ने 1790 में पेटेंट कानून - 'नया बनाओ, 20 साल कमाओ'। 1868 में जापान के मेजी सम्राट: 'पश्चिमी विज्ञान सीखो, वरना गुलाम बनोगे'। 1917 में लेनिन ने यूएसएसआर साम्यवाद की सत्ता और बिजलीकरण को अपना लक्ष्य बनाया। 1978 में देंग शियाओपिंग: 'विज्ञान पहली उत्पादक शक्ति है'। वर्तमान के विकसित देशों ने धर्म को ड्राइंग-रूम में भेजा, बजट को लैब में।

आँकड़े झूठ नहीं बोलते: 2023 मानव विकास सूचकांक टॉप-10: स्विट्जरलैंड, नॉर्वे, जर्मनी, अमेरिका। ये देश सकल घरेलू उत्पाद का औसत 3 प्रतिशत रिसर्च पर लगाते हैं। 1901-2023 विज्ञान नोबेल: अमेरिका 409, ब्रिटेन 138, जर्मनी 111, जापान 29, भारत 9 - जिनमें 3 मूल भारतीय। प्रति व्यक्ति आय 2023: अमेरिका 80,412 डॉलर, भारत 2,601 डॉलर। विश्व बौद्धिक संपदा संगठन 2023: अमेरिका ने 55,266 पेटेंट फाइल किए, चीन 70,015, भारत 8,013। -जहाँ पेटेंट, वहाँ प्रोडक्ट। जहाँ प्रोडक्ट, वहाँ एक्सपोर्ट। जहाँ एक्सपोर्ट, वहाँ डॉलर।-

-भारत का विज्ञान - गौरव भी, गड्ढा भी।- 800 ईसा पूर्व सुश्रुत ने 300 सर्जरी, 120 औजार लिखे। 500 ईस्वी आर्यभट्ट ने पाई 3.1416, धरती का व्यास 99.8 प्रतिशत सही निकाला। 700 ईस्वी ब्रह्मगुप्त ने 'गुरुत्वाकर्षण' दिया- न्यूटन से 1000 साल पहले। नागार्जुन ने पारा-शोधन, भास्कर-द्वितीय ने कैलकुलस की नींव। फिर 1200 ईस्वी बाद नालंदा जला। तुर्क-मुगल काल में 'इल्म' मदरसों तक सिमटा, 'शिल्प' जाति में बँधा। अंग्रेज आए तो हमने रेल देखी, बनाई नहीं। आजादी के बाद: 1948 भाभा-एटॉमिक एनर्जी, 1969 साराभाई-इसरो, 1974 इंदिरा गांधी का पहला पोखरण, -1998 अटल बिहारी वाजपेई सरकार का पोखरण-2 - 11 से 13 मई तक 5 परमाणु परीक्षण, प्रतिबंधों के बावजूद भारत परमाणु शक्ति बना-, 2008 चंद्रयान-1, 2014 मंगलयान पहले प्रयास में, 2023 चंद्रयान-3 दक्षिणी ध्रुव पर पहला। कोविड में 2.2 अरब वैक्सीन डोज, 100 देशों को सप्लाई। यूपीआई से 2023 में 13.9 अरब लेनदेन एक महीने में। कुछ क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता भी आई है जैसे अंतरिक्ष और वैक्सीन में हम नंबर-1 हैं। पर चिप, पैसेंजर जेट इंजन, एमआरएनए प्लेटफॉर्म, लिथियम रिफाइनिंग में अब भी 70-95 प्रतिशत आयात।

1893 में स्वामी विवेकानंद शिकागो गए। धर्म-संसद में भारत का सिर ऊँचा किया। पर अमेरिका की फैक्ट्री, लैब देखकर सो नहीं पाए। दूसरी बार अमेरिका गये और 3 मार्च 1900 को सैन फ्रांसिस्को में बोले: _'India is saturated with religion. What India wants is not religion, but bread.'_ यानी भारत धर्म से सराबोर है। भारत को धर्म नहीं, रोटी चाहिए। 1898 में स्वामी विवेकानंद ने, जब जहाज पर टाटा से मिलन हुआ तो 'मंदिर नहीं, विज्ञान की लैब बनाओ' का संदेश दिया। टाटा ने 1909 में आईआईएससी बनवाया। 1899 कलकत्ता प्लेग में खुद झाड़ू उठाई। बोले-जब तक मेरे देश में एक कुत्ता भी भूखा है, मेरा पूरा धर्म उसे रोटी देना है।

-अब रिसर्च इनोवेशन बनाम उअ्र का हिसाब देखते हैं:- यूनेस्को 2022: जो देश रिसर्च पर खर्च करता है, वही दुनिया पर राज करता है। भारत कहाँ?- भारत 0.64 प्रतिशत - दुनिया में 39वां नंबर। रिसर्चर प्रति 10 लाख आबादी: इज़राइल 8,342, अमेरिका 4,452, चीन 1,307, भारत सिर्फ 253। प्राइवेट सेक्टर की हिस्सेदारी: अमेरिका 78 प्रतिशत, चीन 77 प्रतिशत, भारत 36.4 प्रतिशत। यानी हमारे सेठ लैब नहीं, मॉल खोलते हैं और विदेशी सामान की ट्रेडिंग करते हैं।

परिणाम : वाणिज्य मंत्रालय 2023-24: कुल आयात 677 अरब डॉलर। 1. कच्चा तेल 179 अरब - 87 प्रतिशत निर्भर। 2. इलेक्ट्रॉनिक्स 89 अरब - 60 प्रतिशत चीन। 3. सेमीकंडक्टर 26 अरब - 99 प्रतिशत आयात। दवा का कच्चा माल एपीआई 68 प्रतिशत चीन से। रक्षा आयात 2.93 अरब डॉलर - दुनिया में चौथा बड़ा खरीदार। -सीधा गणित है जो 3 प्रतिशत लगाता है, वो ही बेचता है। जो 0.64 प्रतिशत लगाता है, वो खरीदता है।- हम 'असेंबली हब' बने, 'इनोवेशन हब' नहीं। विवेकानंद ने 125 साल पहले 'material civilization' माँगी थी। हम अब भी माँग रहे हैं।

-भारत को पंथनिरपेक्षता क्यों चाहिए? विवेकानंद ने ही बताया।- पहला - प्रतिभा किसी की बपौती नहीं। 140 करोड़ में हर धर्म-जाति में विवेक है। अगर आईआईटी का फॉर्म 'धर्म' पूछे, तो कलाम, नादेला, पिचाई कैसे निकलेंगे? नासा में 36 प्रतिशत वैज्ञानिक भारतीय मूल के - क्योंकि अमेरिका ने 1965 में धर्म-रंग देखना बंद किया। दूसरा - निवेश। 2022 में भारत को 49 अरब डॉलर एफडीआई मिला। मूडीज: 'सामाजिक अशांति 1 प्रतिशत बढ़े तो निवेश 2 प्रतिशत घटता है'। तीसरा - विज्ञान का माहौल। विवेकानंद 1896 लंदन: _'Science and religion will meet and shake hands'_ यानी विज्ञान और धर्म मिलेंगे और हाथ मिलाएंगे। शर्त - 'धर्म तरक्की में रोड़ा न बने'। धर्म के नाम पर अकाल मृत्यु के ग्रास बने लोगों का इतिहास :'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ वॉर्स' के अनुसार 1763 युद्धों में से 7 प्रतिशत 'पूरी तरह धार्मिक'। क्रूसेड 1095-1291 - 10-30 लाख मौतें। यूरोप के धार्मिक युद्ध 1524-1648 - 80 लाख से 1 करोड़। भारत विभाजन 1947 - 10-20 लाख। 21वीं सदी आतंक - 2000-2023 तक 2.1 लाख मौतें। कुल 2.5-3.5 करोड़। - तुलना: प्रथम विश्वयुद्ध में 2 करोड़, ष्ष्ठ के अनुसार कोविड-19 से दुनिया भर में 70 लाख और भारत में 5.3 लाख दर्ज मौतें।-

-अब उत्पादन के स्त्रोतों पर विचार करते हैं।- एसोचैम 2022: भारत की 'फेथ इकोनॉमी' 3.2 लाख करोड़ सालाना। इसमें से 30 प्रतिशत ताबीज-यंत्र-रत्न यानी 96,000 करोड़ का 'चमत्कार उद्योग'। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण 2022-23 के अनुसार 68 लाख लोग 'धार्मिक कर्मकांड' को मुख्य पेशा बताते हैं। इस अनुत्पादक व्यवसाय से पुजारी, मौलवी, ज्योतिषी, कथावाचक अलीशान जीवन का आनंद लेते हैं। इनकी संख्या ऑस्ट्रेलिया की आबादी के बराबर है। तुलना: आईटी सेक्टर 54 लाख रोजगार, 3.2 लाख करोड़ एक्सपोर्ट। ऑटो सेक्टर 37 लाख रोजगार, 2.8 लाख करोड़ कारोबार। पर धार्मिक सेक्टर के ये 68 लाख लोग न तो पेटेंट बनाते हैं, न एक्सपोर्ट। टैक्स? आईटी सेक्टर से सरकार को 1.1 लाख करोड़। फेथ इकोनॉमी ज्यादातर टैक्स-फ्री। तिरुपति का बजट 5,123 करोड़ - पंजाब के यूनिवर्सिटी बजट से दोगुना। काशी में चढ़ावा 100 करोड़ से 500 करोड़ हुआ। पर 'चमत्कार उद्योग' का जीएसटी नहीं के बराबर है जबकि अमेरिका जैसे विकसित देशों में धार्मिक संस्थानों को वार्षिक आयकर रिटर्न भरना पड़ता है। विवेकानंद ने कहा, 'भूखे को धर्म का उपदेश देना पाप है'।

-दो बातें जो इतिहास की किताबों में नहीं मिलती।- पहला - 'जुगाड़' बनाम 'डीप-टेक'। 0.5 रुपये में मंगलयान भेज देते हैं, पर प्रोसेसर अमेरिकी। हम 'सस्ता' कर लेते हैं, 'नया' नहीं बना पाते। 2023 में ओपनएआई, गूगल, मेटा ने एआई पर 50 अरब डॉलर लगाए। भारत की कुल फंडिंग 5 अरब डॉलर। दूसरा - जाति लैब का दीमक। आईआईटी बॉम्बे 2023: 50 प्रतिशत आत्महत्या दलित-आदिवासी छात्रों की। कारण - 'तुम कोटा(आरक्षण)से आए हो'। -विज्ञान को 'पहचान' नहीं, 'प्रतिभा' चाहिए।-

देश को प्रगतिशील बनाने के लिए पहला कदम - बजट। 0.64 प्रतिशत से 2 प्रतिशत 2030 तक। चीन ने 1996 में 0.57 प्रतिशत से 2022 में 2.43 प्रतिशत किया। दूसरा - प्राइवेट सेक्टर। टाटा, रिलायंस को 10 साल टैक्स-छूट अगर बेसिक-साइंस लैब खोलें। (Corporate Social Responsibility)' से 'आरएंडडी' शिफ्ट। तीसरा - शिक्षा। कक्षा 3 से 'सवाल पूछो' प्रोजेक्ट शुरू किया जावे। विद्यार्थी को 10वीं में 20 नंबर उसको यह बताने पर मिलें कि 'फलां प्रयोग फेल क्यों हुआ'। इससे उसमें सोचने की क्षमता का विकास होगा। धर्म ग्रंथ पढ़ाओ, पर कार्बन-डेटिंग भी। चौथा - पाखंड दंड-संहिता। '10 मिनट में वशीकरण' बोलने वाले को 3 साल जेल। ताबीज पर 28 प्रतिशत GST + 'इससे नौकरी नहीं लगती' वार्निंग। पाँचवाँ - पंथनिरपेक्षता। आर्टिकल 5151A(h) – वैज्ञानिक सोच अनिवार्य। दंगा भड़काने वाले नेता की पेंशन-पासपोर्ट-चुनाव रद्द।

वर्तमान में धरती पर लगभग 8 अरब लोग हैं। 84 प्रतिशत किसी न किसी धर्म को मानते हैं। धर्म ने कला, संगीत, नैतिकता दी, इसके लिए शुक्रिया। पर भूख, बीमारी व जीवन की अनेकों भौतिक समस्याएं विज्ञान ने मिटाई। ''1900 में भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा सिर्फ 23-24 साल थी - क्योंकि 1000 बच्चों में से 200-250 बच्चे 1 साल से पहले ही मर जाते थे। आज 70 साल है - आधुनिक चिकित्सा, वैक्सीन और एंटीबायोटिक के कारण न कि यज्ञ आदि के कारण से।'' 1960 में अकाल से लाखों मरे, आज 80 करोड़ को मुफ्त अनाज- -बोरलॉग के गेहूं से, भंडारे से नहीं।- विवेकानंद: - 'पहले रोटी, फिर राम'-। -'पहले लैब, फिर मंदिर'-। हमने योग दिया, पर चिप-जेट इंजन अब भी खरीदते हैं। योगा मैट 100 डॉलर, चिप 10 हजार डॉलर। चुनाव तुम्हारा: ताबीज बेचकर 2.5 ट्रिलियन रहें, या ट्रांजिस्टर बेचकर 10 ट्रिलियन बनें? -लैब में घंटा नहीं बजता, पर वहाँ बजने से दुनिया की घंटी बजती है।- विवेकानंद का सपना 'विश्वगुरु' नहीं, 'विज्ञान-आध्यात्म में स्वावलंबी भारत' था। -उठो, जागो - और लैब चलो।

-मदन सिंह काला,
पूर्व आई.ए.एस

सेवा शिविर में जयसिंह का बरसों से अटका भूमि बंटवारा एक घंटे में हुआ

जयपुर। ब्यावर जिले की जवाजा पंचायत समिति के अतीतमण्ड निवासी जयसिंह पुत्र गोकुल सिंह खातेदारी भूमि का बंटवारा नहीं होने से परेशान था। उसे लोन लेने, उन्नत बीज, कृषि यंत्र अनुदान, पीएम किसान सम्मान निधि का लाभ लेने के लिए पहले साझेदारों के चक्कर काटने पड़ते, फिर पूरा लाभ भी नहीं मिल पाता। जमीन का मामला होने के कारण उसे धोखाधड़ी का भी डर था, लेकिन विभिन्न कारणों से बंटवारा नहीं हो पा रहा था। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जयसिंह जैसे लोगों के मन की मुराद सुनी और गत 12 जून से प्रत्येक ग्राम पंचायत में ग्रामीण सेवा शिविर लगवाना शुरू किया। अतीतमण्ड में सेवा शिविर लगने की जानकारी मिलने पर जयसिंह शिविर में पहुंचा और शिविर प्रभारी को इस सम्बंध में प्रार्थना पत्र दिया।

■ ब्यावर के अतीतमण्ड में आयोजित सेवा शिविर में जयसिंह को न्याय मिला

शिविर प्रभारी उपखण्ड अधिकारी ने तहसीलदार को प्रार्थी की खातेदारी भूमि का बंटवारा करके उनके समक्ष प्रकरण पेश करने का आदेश दिया। ब्यावर तहसीलदार ने हलका पटवारी व गिरदावर को बंटवारा करने के आदेश दिए। हलका पटवारी व गिरदार ने मौके पर जाकर बंटवारा प्रस्ताव तैयार कर शिविर में तहसीलदार ब्यावर को पेश किया जिसे तहसीलदार ने शिविर में स्वीकृत किया। यह पूरी प्रक्रिया एक घंटे में हो गयी।

इस पर जयसिंह ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार प्रकट करते हुए कहा कि नेता भाषण देते हैं, आश्वासन देते हैं, हमारे मुख्यमंत्री पब्लिक के काम करते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हीरे जैसा मुख्यमंत्री हमको मिला है। भगवान मुख्यमंत्री जी पर स्वास्थ्य एवं दीर्घायु का आर्शीवाद बनाये रखें।

सेवा शिविर में तहसीलदार ने जयसिंह को बंटवारा पत्र सौंपा।

राशिफल गुरूवार 18 जून, 2026

पंडित अनिल शर्मा

द्वितीय ज्येष्ठ मास (शुद्ध), शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2083, पुष्य नक्षत्र दिन 11:32 तक, व्याघात योग सायं 5:35 तक, वणिज करण प्रात: 8:19 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-कर्क, शुक्र-कर्क शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सवार्थ सिद्धि योग, गुरू पुष्य और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 11:32 तक है। रवियोग आज दिन 11:32 तक है। आज भद्रा प्रात: 8:19 से सायं 6:59 तक है। आज विनायक चतुर्थी, गुरू पुष्य योग, उमा चतुरथी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:20 तक, चर 10:45 से 12:28 तक, लाभ अमृत 12:28 से 3:53 तक, शुभ 5:36 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय